मसलके आला हज़रत
3rd Urse Tajush'Shariah
40
हदीसे
शान ए
अहले बैत
गदा-ए-अहले-बैत
अनवर रज़ा खान अज़हरी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी ज़ात बेमिस्ल व याकता है। तू हमेशा से है, हमेशा के लिए है। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारा चीजो को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब कहलाने वाला है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिंदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो सल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला हर दौर में निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिंदायत पाउं, नबिए करीम के सुन्नत को अपनाउ और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाउं, ऐ मेरे रब एहसान है की मुझे इंसान यानी अशरफ उल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता।

दरूद व सलाम हो उस नबी पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया , दरूद व सलाम हो उस नबी के आअल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिसने तुझे राजी किया।

अहले बैत का मतलब नबी सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम **के घराने वाले**

अकसामे (किस्मे) अहले बैतः

अहले बैत की तीन किस्में हैं

1-**सकनी-** यानी घर में कयाम करने वाले काबिले रिहाइश यानी हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की तमाम अजवाजे मुतहरात (बिवियां)

2-**निसबती व नस्ली**- यानी जिन से हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का निसबती व नस्ली तआल्लुक है यानी हजरत मौला अली , सइयदा फातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (रजिअल्लाहूअन्हुमा)।

3-**ऐजाजी**- यानी वो हस्तियाँ जिनको हुजूर सल्लल्लाह अलैह वसल्लम ने बतौर ऐजाज अपने अहले बैत में शामिल किया और फरमाया हर परहेजगार उम्मती मेरी आअल है, जैसे-हजरत सलमान फारसी (रजिअल्लाहूअन्हु)।

अहले बैत की मुहब्बत हर मुसलमान पर फर्ज है क्योंकि मुहब्बते अहले बैत ईमान की जान और शर्ते ईमान है उनकी मुहब्बत के बगैर किसी शख्स के दिल में ईमान दाखिल नहीं हो सकता हदीस पाक में वारिद है रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फरमाया इस्लाम की बुनियाद मेरी और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है और हम तमाम मुसलमानों के लिये हुक्मे खुदावन्दी है कि अहले बैत से मुहब्बत करो अहले बैत की मुहब्बत मुहब्बते रसूल है और मुहब्बते रसूल मुहब्बते खुदा है।

अहले बैत अतहार की शानो अजमत व कदरो मन्जिलत व कमालातो किरदार इन्तिहाई बुलन्द व बाला हैं अल्लाह रब्बुल इज्जत ने इन्हें मखसूस सिफात और पाकीजगी का आला तरीन नमूना बनाया और अजीम मरतबों से नवाजा अहले बैत अतहार की फजीलत में बेशुमार अहादीस मन्कूल हैं और इनकी शानो अजमत में आयाते कुरआनी नाजिल हुई हैं जिनमें बाज का तजकिरा हस्बे जैल है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) आप मुसलमानों से फरमां दीजिये कि मैं तबलीग पर तुमसे कोई बदला या सिला नहीं मांगता अलबत्ता मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे कराबतदारों से मुहब्बत करो। (सू०-शूरा-२३)

वजाहतः- मजकूरा आयात में हुक्मे खुदावन्दी है कि ऐ महबूब आप

मुसलमानों से फरमा दीजिये कि ऐ लोगों मैने जो तुम पर मेहनत की गारे हिरा में सज्दा रेज होकर आँसू बहाये और निहायत सखत मसाइबो आलाम बर्दास्त किये और तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशन मकाम अता किया और तुम्हें गुमराहियों के अंधेरों से निजात देकर सिराते मुस्तकीम की राह दिखाई और मैने शिकम (मुबारक) पर पत्थर बाँधकर खन्दकें खोदी मैदाने उहद और तॉयफ में अपने जिस्म (अतहर) पर जख्म खाये और तुम्हें जहन्नुम से बचाकर राहे जन्नत पर डाल दिया और तुम्हें जहालत व जिल्लत से बचाकर इज्ज़त व इन्सानियत से हम किनार किया और तुम्हें दावते हक़ देकर तुम्हारी रहनुमाई की और ईमान से बहरेयाब किया।

इन तमाम एहसानात का मैं तुमसे कोई बदला या सिला नहीं माँगता मेरा अज्र तो मेरे रब के पास है और मुझे मेरा अज्र मेरा रब अता करेगा मैं तुमसे किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ बल्कि मुझे तो तुम्हारे अज्र की फिक्र है जो तुम्हें मेरे कराबत दारों से मुहब्बत के बाइस मिलेगा मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो इसी में तुम्हारी भलाई और बेहतरी है और दुनियाँ व आखिरत में अज्रे अजीम का बाइस है।

अल्लाह तआला और उसके रसूल (हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) की कुर्बत और ईमान में पुख्तगी मेरे अहले बैत की मुहब्बत से हासिल होगी इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो।

इसे भी पढ़े

मोहब्बते अहलेबैत ये मोहब्बत बड़े सख्त इम्तेहान लेती है

अहलेबैत की मोहब्बत में

- इमाम निसाई को मिम्बर पर शहीद किया गया,
- इमाम बुखारी के जनाजे पे कोई नही आया,
- इमाम हाकिम पर कुफ्र का फतवा दिया गया,
- इमामे आजम अबु हनीफा को जहेर दे कर शहीद किया गया
- इमाम मालिक के हाथ उखाड़े गए,
- इमाम अहमद इब्ने हम्बल को शहर से बाहर कर दिया गया,

इमाम शाफई को इस कदर परेशान किया कि मक्का छोड़ कर मिस्र चले गए और इन हजरात पर शियत का फतवा दिया गया,जिसके जवाब में इमाम शाफई ने फरमाया, “हुजूर के अहलेबैत की मोहब्बत अगर शियत है तो मैं शिया हूँ।”

40 हदीसें

हज़रत अबूदर्दा. रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ्त किया गया कि इल्म की गायत और मर्तबा कौन-सा है जिस पर पहुंच कर मर्द **फकीह** कहलाता है। और फुकहा के जुमरे में शामिल होता और उनका सवाब पाता है ? रसूले करीम सल्लल्लाहु व आलिही वसल्लम ने फरमाया : जो दीन. से मुतअल्लिक चालीस हदीसे याद करे और लोगों तक पहुंचाए तो अल्लाह तआला उसे क्यामत के दिन गिरोहे फुकहा में उठाएगा। और मैं क्यामत के दिन उसके गुनाहों की शफाअत करूंगा और उसके ईमान व ताअत की गवाही दूंगा।

(मिश्कातुल-मसाबीह)

इस हदीसे पाक की रौशनी में सल्फ व खल्फ अकाबिर उलमाए किराम . ने हुजूर ताजदारे अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफाअत के उम्मीदवार बनने और आपको शाहिद बनाने के लिए चालीस हदीसों को जमा किया और उसे तहरीर फरमा कर - शाये फरमाया।

मैं गुनाहगार जब इस हदीसों को पढ़ा तो अपनी गुनाहो की मगफिरत के लिए अपने रब से मगफिरत का दुआ किया और अल्लाह की मदद से अपना कम्प्युटर में इसे नकल करके 40 हदीसों को जमा किया और आप तक ऑन लाइन /ऑफ लाइन पहुंचाने का कोशिश किया।

अगर आप तक पहुंच चुका है तो इसे पढ़कर, अमल करे और दूसरो तक पहुचाने का जिम्मेवारी ले। ताकि आपका भी इसी बहाने मगफिरत हो जाय।

मनकबत ए अहले-बैत

बागे जन्नत के हैं बहरे मदह–ख्वाने अहले–बैत
तुम को मुजदा नार का ऐ दुशमनाने अहले–बैत

किस जबां से हो ब्याने इज़्ज़त व शान अहले–बैत
मदह गोए मुस्तफा है मदह–ख्वान अहले–बैत

उनकी पाकी का खुदाए पाक करता है ब्यां
आयते ततहीर से ज़ाहिर है शाने अहले–बैत

उनके घर में बे–इजाजत जिब्राईल आते नहीं
कद्र वाले जानते हैं कद्र व शाने अहले–बैत

रज़्म का मैदां बना है जलवा–गाहे हुस्न व इश्क़
करबला में हो रहा है इम्तिहाने अहले–बैत

फूल जख्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
खून से सींचा गया है गुल्सिताने अहले–बैत

हूरें. करती हैं उरूसाने शहादत का सिंगार
खूबरू दूल्हा बना है हर जवाने अहले–बैत

जुमा का दिन है किताबें जीस्त की तय करके आज
खेलते हैं जान पर शहजादगाने अहल–बैत

ऐ शबाबे फ़स्ले गुल! यह चल गयी कैसी हवा –
कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले–बैत

खुश्क हो जा ख़ाक होकर खाक में मिल जा फुरात
खाक तुझ पर देख तू! सूखी जुबाने अहले–बैत

बागे जन्नत छोड़ कर आए हैं महबूबे खुदा
ऐ जहे किस्मत तुम्हारी कुश्तगाने अहले–बैत

हूरें बेपरदा निकल आयी हैं सर खोले हुए
आज कैसा हश्र है बरपा म्याने अहले–बैत

घर लुटाना, जान देना, कोई तुझसे सीख ले
जाने आलम हो फिदा, ऐ ख़ानदाने अहले–बैत – '

सर शहीदाने मोहब्बत के हैं नेजों पर बुलन्द
और ऊंची की खुदा ने, कद्र व शाने अहले–बैत

जख्म खाने को, तो आबे तेग पीने का दिया
खूब दावत की बुला कर दुशमनाने अहले–बैत

अहले–बैते पाक से गुस्ताखियां बे–वाकियां
लअनतुल्लाहि अलैकुम दुश्मनाने अहले–बैत

बेअदब गुस्ताख़ फिर्के को सुना दे ऐ हसन
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले–बैत

(अल्लामा हसन रजा खाँ बरेलवी)

अहले-बैत की फजीलत पर 40 हदीसें .

(हदीस 1)

हज़रत जाबीर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है फरमाते है मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना की ''ऐ लोगो मैं तुम्हारे बीच 2 चीजें छोड़ी है 1. अल्लाह की किताब यानी **कुरआन** और 2 मेरी **अहले बैत**'' जब तक तुम उनका दामन थामे रहोगे गुमराह न होगे।

(जामे तिर्मिजी, जिल्द 6, बाब किताबुल मनाकिक, हदीस-3786)

(हदीस 2)

हज़रत मौला अली करीमुल्लाह तआला वजहहुल-करीम फरमाते है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हसनैन करीमैन के हाथ को अपने दस्ते मुबारका में लेकर फरमाया : जो मुझसे मेरे इन दोनों फरजन्दों और उनके वालिदैन से मुहब्बत करेगा वह क्यामत के दिन मेरे साथ होगा और जन्नत के भी उस दर्जा में रखा जायेगा जहां मैं रहूंगा।

. (शेफा शरीफ, जिल्द दोम, सफा 59) -

(हदीस 3)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : मेरे **अहले-बैत** उम्मत के लिए अमान (हिफाजत करने वाला) हैं। जब अहले-बैत न रहेंगे तो उम्मत पर वह (कयामत)आएगा जो उनसे वादा है।

(सवाइके मुहर्रका सफा 514-अल-अमन वल उला सफा 26)

(हदीस 4)

बैहकी ने रिवायत किया कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलौह वसल्लम ने फरमाया कि अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ 1. अपने **नबी** पाक की उल्फत व मुहब्बत 2. **अहले-बैते** अतहार की उल्फत व मुहब्बत 3. कुरआने करीम की किर्अत

(सवाइके मुहर्रका सफा 577).

(हदीस 5)

बैहकी और वैल्मी ने रिवायत किया कि आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहे

वसल्लम ने फरमाया :कोई बन्दा-ए-मोमिने कामिल नहीं हो सकता यहां तक कि मैं उसको - उसकी जान से ज्यादा प्यारा न हूँ और मेरी औलाद उसको अपनी जान से ज्यादा प्यारी न हो और मेरे आह्ल उसको अपने आह्ल से ज्यादा महबूब न हों और मेरी जात उसको अपनी जात से ज्यादा महबूब न हो।

(सवानेहे करबला सफा 53)

(हदीस 6)

इमाम अहमद ने रिवायत किया कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो शख्स अहले-बैत से बुग्ज रखता है वह मुनाफिक है।

(सवाइके मुहर्रका सफा 764)

(हदीस 7)

वैल्मी ने रिवायत किया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया : जो मुझसे वसीला की तमन्ना रखता हो और यह चाहता हो। उसको मेरी बारगाहें करम में रोजे कयामत हक्के शफाअत हो तो उसे चाहिये कि वह मेरे अहले-बैत की न्याजमन्दी करे और उनको हमेशा खुश रखे।

(सवाइके मुहर्रका सफः 588).

(हदीस 8)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : आले मुहम्मद से एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है और मुझसे और मेरे अहले-बैत से मुहब्बत रखना सात खतरनाक मकाम पर फायदा बख्श है।

(सवाइके मुहर्रका सफाः 767)

(हदीस 9)

हजरत अबू-सईद खुदरी रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कसम है उस जात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है जिसने मेरे अहले-बैत से बुग्ज रखा खुदावन्द कुद्दूस उसको दौज़ख में डालेगा।

(खसाइसुल-कुब्रा जिल्द दोम सफा 496)

(हदीस 10)

अमीरुल-मोमिनीन हजरत सैयदना मौला अली मुशकिल कुशा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो शख्स मेरी इतरत यानी अहले-बैत और अन्सार के हुकूक को न पहचाने और उनके हुकूक अदा न करे तो उसमें उन तीन बातों में कोई एक बात जरूर होगी - १ या तो वह मुनाफिक होगा २ या जिना की औलाद होगा या फिर ३ वह हैज व निफास-जैसी नापाकी की हालत में उसकी माँ की पेट में रहा होगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा 580)

(हदीस 11)

वैल्मी ने हजरत मौला अली रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैं ने हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फरमाया : जो लोग हौजे कौसर पर पहले आएंगे वह मेरे अहले-बैत होंगे।

(सवाइके मुहर्रका सफा 622)

(हदीस 12)

अमीरुल-मोमिनीन हजरत सैयदना उस्मान इब्ने अफ्फान रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जिस शख्स ने दुनिया में औलादे अब्दुल-मुत्तलिब या औलादे बनी हाशिम यानी अहले-बैत से कुछ नेकी या अच्छा सुलूक या एहसान किया फिर वह अहले-बैत उस का बदला न दे सके तो क्यामत के रोज उस सैयद की तरफ से मैं पूरा-पूरा बदला अता करूंगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा :792)

(हदीस 13)

हाकिम और वैल्मी ने हजरत अबू-सईद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: . तीन चीजें ऐसी हैं जो शख्स उन चीजों की हिफाजत करेगा अल्लाह तआला उसकी दुनिया और दीन दोनों की हिफाजत फरमाएगा। और जो शख्स उन बातों को जाए करेगा अल्लाह तआला

उसके किसी काम की हिफाजत नहीं फरमाएगा। (१) इस्लाम की इज्जत (२) मेरी इज्जत (३) मेरे कराबत दारों और अहले-बैत की इज्जत।

(सवाइके मुहर्रका सफा 769

(हदीस 14)

हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमायां : आसमान के तारे अहले जमीन के लिये सफरे दरिया में डूबने से बचाने में बाइसे पनाह और मोजिबे अमान हैं। मेरे अहले-बैत मेरी उम्मत को इखतिलाफ और तफरका में पड़ने से बचाने में बाइसे अमन हैं। जब मेरे अहले-बैत से कोई गिरोह इखतिलाफ करके अलग हो जाए तो वह गिरोह शैतानी गिरोह समझा जाएंगा।

(खसाइसुल-कुबरा जिल्द दोम, सफा 497)

(हदीस 15)

वैल्मी ने हजरत अबी सईद से ब्यान किया है कि रसूलें करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो शख्स मेरे औलाद के मुतअल्लिक मुझे अजीयत (तकलीफ) देगा उस पर सख्त गजबे इलाही नाजिल होगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 621)

(हदीस 16)

वैल्मी ने हजरत अबी-सईद से ब्यान किया है कि हुजूर सल्लल्लाहु "अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख्स यह चाहता है कि उसकी उम्र लम्बी हो और अल्लाह तआला ने जो उसे दिया है उससे लुत्फ-अन्दोज हो तो उसे चाहिए कि मेरे अहले-बैत के बारे में मेरा अच्छा जांनशीन बने। और जो उनके बारे में मेरे बाद उनका अच्छा जानशीन न हुआ तो उसकी उम्र काट दी जायेगी और वह क्यामत के दिन मेरे पास रूस्वाह होकर आएगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 621)

(हदीस 17)

हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुम लोग किसी के वास्ते खड़े न हो मगर हसन और हुसैन (रजियल्लाहु अन्हुमा) और उनकी औलाद के लिए खड़े रहा करो।

(खसाइसुल-कुबरा, जिल्द 2 सफा :497)

(हदीस 18)

हजरत हसन रजियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मुझ पर और मेरे अहले बैत पर सदका हराम कर दिया है।

(खसाइसुल-कुबरा-जिल्द दोम सफाः ४३०)

(हदीस 19)

हजरत उम्मे-सलमा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : यह मस्जिद जुंबी और हाइजा के लिए हलाल नहीं है मगर मेरे लिए और मौला अली फातिमा और उनके साहिबजादे हसन व हुसैन के लिए हलाल है।

(खसाइसुल-कुबरा जिल्द दोम सफा : 452)

(हदीस 20)

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मैंने अपने रब से दुआ की कि वह अहले-बैत में से किसी को आग में दाखिल न फरमाए तो उसने मेरी यह दुआ कुबूल फरमा ली।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 622)

(हदीस 21)

मुहिब्बे तबरी ने एक रिवायत नकल फरमाई है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला ने तुम (उम्मती) पर जो मेरा अज्र मुकर्रर किया है वह मेरे अहले-बैत से मुहब्बत करना है। और मैं कल तुमसे उनके बारे में दर्याफ्त करूंगा। (सवाइके मुहर्रका सफा 753)

(हदीस 22)

हजरत अब्बास रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो नेमतें अल्लाह तआला तुम (उम्मती) को दे रहा है उनके बाइस उनसे मुहब्बत रखो और मुझसे खुदाए तआला की मुहब्बत की वजह से मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले-बैत से मुहब्बत रखो। (तिर्मिजी शरीफ-जिल्द 2 सफा : 768)

(हदीस 23)

तबरानी ने हजरत इब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से एक रिवायत नकल फरमाई है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आखरी कलाम यह फरमाया कि मेरे अहले-बैत के मुतअल्लिक मेरे जांनशीन बनो।

(सवाइके मुहर्रका सफा :507)

(हदीस 24)

हजरत अबू-बक्र ख्वारजमीं के हवाले से रिवायत नक्ल की गयी है कि रसूलुल्ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाए तो आपका रुखे अनवर इस तरह तलअतबार था जैसे चाँद का दायरा। हजरत - अबदुर्रहमान बिन औफ रजियल्लाहु अन्हु ने उस मुसर्रत के मुतअल्लिक पूछा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मुझे मेरे परवरदिगार की तरफ से बशारत दी गयी है कि मेरे चचाजाद भाई अली और मेरी चहेती बेटी फातिमा को अल्लाह तआला ने रिश्तए जौजीयत में मुन्सलिक फरमाकर रिजवाने खाजिने जन्नत को हुक्म फरमाया कि वह जन्नती दरख्त तूबा को हिलाए. और उसके गिरने वाले तमाम पत्ते मुहिब्बाने अहले-बैत की तादाद के मुताबिक उठा लिये जाएं। फिर तूबा के नीचे नूर से फरिश्ते पैदा किए और वह पत्ते फरिशतो को दिए गए। पस जब क्यामत काइम होगी तो फरिशते तमाम मखलूकात में निदा फरमाएंगे और मुहिब्बाने अहले-बैत में से कोई शख्स भी ऐसा शख्स न होगा जिसे वह पत्ता न दिया - जाए और उस पत्ते पर मुहिबाने अहले-बैत के लिये जहन्नम से रिहाई के बारे में लिखा होगा। ...

(सवाइके मुहर्रका सफा : 581)

(हदीस 25)

तबरानी और हाकिम हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाह अनहुमा रिवायत करते हैं कि रसूले काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसलम फरमाया : अगर कोई शख्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशा और मकामे इब्राहीम के दर्मियान चला जाये और नमाज पढ़े और रोजे रखे फिर व अहले-बैत की दुशमनी पर मर जाए तो जहन्नम की आग में जाएगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 795)

(हदीस 26)

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अल्लाह तआला मेरे अहले-बैत पर जुल्म करने वाले, उनसे जंग करने वाले और उन्हें बुरा कहने वाले इन सब पर जन्नत हराम कर दिया है।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 765-खसाइसुल कुबरा जिल्द दोम सफा : 466)

(हदीस 27)

तबरानी ने ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अली से फरमाया : तू और तेरे अहले-बैत और तुम्हारे चाहने वाले (मोहब्बत करने वाले) जिन्होंने मेरे सहाबा को. गाली देने की बिदअत एखतियार नहीं की वह हौजे कौसर पर सैराब और सफेद-रू जाहिर होंगे। और तुम्हारे दुशमन प्यासे और सर उठाए हुए आएंगे।

. . (सवाइके मुहर्रका सफा : 766)

(हदीस 28)

वैल्मी ने हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुममें जयादा बेहतर वह है जो मेरे बाद मेरे अहले-बैत के लिये साबित हो।

(सवाइके मुहर्रका सफा 622)

(हदीस 29)

मुहिब्बे तबरी ने शर्फुन्नुबुव्वत में हजरत अबी-सईद से बिला असनाद ब्यान किया है कि मैं और अहले-बैत जन्नत का दरख्त हैं और उसकी शाखें दुनिया में हैं जो उनसे वाबस्ता रहेगा वह अपने रब की तरफ रास्ता पाएगा।

(सवाइके मुहर्रका, सफा :780)

(हदीस 30)

हजरत मौला अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : तुममें से सबसे ज्यादा पुलसिरात पर साबित कदम रहने वाला वह शख्स होगा. जो मेरे अहले-बैत और मेरे असहाब की मुहब्बत में ज्य़ादा मज़बूत क़वी और सख्त होगा। .

(सवाइके मुहर्रका सफा : 624

(हदीस 31)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मेरे अहले-बैत को बुरा-भला कहा तो वह अल्लाह तआला और इस्लाम से मुरतद हो गया और जिसने मेरी औलाद को तकलीफ दी उस पर अल्लाह की लानत होगी। (सवाइके मुहर्रका सफा : 765)

(हदीस 32)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मारफत (पहचान) दौजख के अजाब से नजात का बाइस है और मुहब्बत रखना आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पुलसिरात से गुजर जाने की सनद है और विलायते आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अमान(हिफाजत) है अजाब से।

(शिफा शरीफ जिल्द 2 सफा : 97)

(हदीस 33)

हजरत अब्दुल्लाह इब्न उमर रजियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मेरी उम्मत में सबसे पहले मेरी शफाअत अपने अहले-बैत के लिये होगी। .

(सवाइके मुहर्रका सफा :778)

.

(हदीस 34)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : क्यामत के रोज चार किस्म के आदमियों की शफाअत करूंगा। १, जो मेरी आल व औलाद की इज्जत करेगा, २, जो उनकी जरूरियात को पूरा करेगा, ३, जब वह किसी काम में परेशान हो जायें तो उनके उमूर को पाए तकमील तक पहुंचाने के लिए सरगरमे अमल हो जाएय और ४ जो अपने दिल और जुबान से उनका चाहने वाला हो।

(मनाकिबे अहले-बैत सफा : 70, सवाइके मुहर्रका सफा : 692 व 589)

(हदीस 35)

तबरानी शरीफ में है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरे अहले-बैत के बारे में मेरी मुहब्बत का ख्याल रखो। इसलिए कि जो शख्स अहले-बैत से और हमसे मुहब्बत रखते हुए अल्लाह तआला से मिलेगा तो वह हमारी शफाअत से जन्नत में दाखिल होगा। उस जात की कसम जिसके कबजए कुदरत में मेरी जान है किसी शख्स का कोई भी नेक अमल उसको कुछ फायदा न देगा जब तक कि वह हमारे हुकूक को न पहचाने और उनको अदा न करे।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 766) .

(हदीस 36)

वैल्मी ने ब्यान किया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जो शख़्स खुदाए तआला से मुहब्बत रखता है वह कुरआन से मुहब्बत रखता है (और जो कुरआन से मुहब्बत रखता है वह मुझसे मुहब्बत रखता है।) और मुझसे मुहब्बत रखता है। वह मेरे असहाब और कराबतदारों से मुहब्बत रखता है।

(सवाइके मुहर्रका सफ। :767..

(हदीस 37)

मुहिब्बे तबरी ने रिवायत किया है कि मोमिन और मुत्तकी अहले-बैत से मुहब्बत रखता है और मुनाफिक और शकी अहले बैत बुग्ज रखता है।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 767)

(हदीस 38)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जिसने मेरे अहले-बैत के किसी आदमी से बुग्ज रखा वह मेरी शफाअत से महरूम रहेगा।

(सवाइके मुहर्रका, सफा : 794)

(हदीस 39)

हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मेरे अहले-बैत हौजे कौसर पर आएंगे और मेरी उम्मत में जो शख्स उनसे मुहब्बत करेगा वह दो उंगलियों (आमने-सामने) की तरह उनके साथ इकट्ठा होगा।

(सवाइके मुहर्रका सफा : 516)

(हदीस 40)

हाफिज इब्ने असाकिर की रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया इस्लाम की बुनियाद मेरी मुहब्बत और मेरे अहले-बैत की मुहब्बत है।

(मनाकिब अहले-बैत सफा : 91)